ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2019; 5(12): 419-423
www.allresearchjournal.com
Received: 20-10-2019
Accepted: 24-11-2019

डॉ0 कुलदीप
सहायक प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, मदरहुड विश्वविद्यालय, रूड़की, उत्तराखंड, भारत

Corresponding Author:
डॉ0 कुलदीप
सहायक प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, मदरहुड विश्वविद्यालय, रूड़की, उत्तराखंड, भारत

माध्यमिक स्तर के हिंदी व अंग्रेजी माध्यम के छात्रों के समायोजन स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 कुलदीप

सारांश
समायोजन श्रेष्टता प्राप्ति का आधार है। जैसा कि कथन है– मनुष्य सामाजिक प्राणी है। वह समाज में रहकर के अपने जीवन की यात्रा को चलाता है। उसकी स्वंय की रूचि, पंसद वाले समुह को प्राप्त कर लेता है। अपने जीवन को सरल, सहज सुगम बनाने के लिए मानव की आवश्यकता होती है। जिसमें की वह समुह बनाकर रहता है। उस समुह के नियम आचार संहिता मान्यताओं का पालन करता है एंव स्वंय समुह में गातिशील रहकर समायोजित ढंग से जीवन यापन करता है। मानव जीवन विकास पर निर्भर है। इस विकास को प्राप्त करने के लिए शिक्षण अधिगम की आवश्यकता होती है। शिक्षा मनुष्य को समुचित समायोजित के लिए प्रेरित करती है। एंव राष्ट्र विकास के लिए उससे अपेक्षा करती है। समायोजन एक संतुलित दशा है जिसपर पहुचने पर हम व्यक्ति को सुसमायोजित करते है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी क्षमता के अनुकुल समायोजन करने का प्रयास करता है। शिक्षा द्वारा व्यक्ति के समायोजन करने के तौर तरीकों को सुधारा एंव सवंर्द्धित करता है। प्रस्तुत अध्ययन द्वारा भाषा के आधार पर छात्रों के समायोजन का अध्ययन किया गया जिसमें की निष्कर्ष रूप में यह पाया गया है। कि कुछ क्षेत्रों में छात्रों के समायोजन स्तर में अन्तर है।

कूटशब्दः माध्यमिक स्तर, हिंदी भाषा, अंग्रेजी भाषा, समायोजन।

प्रस्तावनाः
मनुष्य अपने विचार इच्छाओं तथा भावो को भाषा के द्वारा अभिव्यक्त करता है बालक परिवार में रहकर अपनी मातृभाषा सीखता है उसके बाद स्थानीय भाषा फिर राष्ट्रभाषा को सीखता है भारत जैसे विकासशील देश में हिंदी ऐसी भाषा है जो अधिकांशतः बोली जाती है हिंदी माध्यम के विद्यालयों का परिवेश परंपरागत प्रकार का होता है जिस में अध्ययनरत विद्यार्थियों में परंपरागत ढंग से मूल्यों का पोषण होता है और शिक्षा दीक्षा मातृभाषा को माध्यम मान कर दी जाती है हिंदी माध्यम के बच्चों का भाषा विकास घर, समाज वह विद्यालयों में लगभग समान स्तर का होता है क्योंकि माध्यम ही उनकी मातृभाषा होती है अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों का परिवेश आधुनिकता धारण किए हुए हैं भौतिकता प्रभावी है जहां से बच्चों को परंपरागत मूल्यों से हटकर कुछ कृत्रिम परिवेश में आना पड़ता है जहां समायोजन में कठिनाई आने लगती है और वह धीरे–धीरे उस परिवेश में अपने को समायोजन करने का प्रयास करता है इसमें सबसे बड़ी बाधा भाषा का माध्यम होता है क्योंकि भाषागत लगाओ तो मातृभाषा का है घर व समाज में तो परंपरागत भाषा में बने रहते हैं और विद्यालय की चारदीवारी के अंदर पहुंचते ही उसमें कृत्रिमता का परिवेश समायोजन करने की बाध्यता आ जाती है जिसे प्राकृतिक विकास प्रभावित होने लगता है बल्कि वह रोल प्लेयर बनने लगता है जिसका उसके व्यक्तित्व पर दोहरेपन होने की विशेषताएं परिलक्षित होने लगती है।
भारत जैसे विकासशील देश में शिक्षा के तीनों स्तरों प्राथमिक माध्यमिक व उच्च स्तर में हिंदी में अंग्रेजी भाषा में शिक्षा की व्यवस्था है परंतु महत्व अंग्रेजी को दिया जाता है माध्यमिक शिक्षा हमारी शिक्षा व्यवस्था की मेरुदंड है यही उच्च शिक्षा प्राप्त करने की मात्रा में वृद्धि करती है माध्यमिक स्तर पर हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों में परंपरागत मूल्यों उसके पाठ सीखने में भी उसकी सहायता करते हैं जिससे उसमें सीखने के तरीके अर्थात अधिगम शैली का विकास भी परंपरागत भाषा माध्यम में ही होता है पूर्व में अपना पाठ का सीखना उसी अनुरूप करते हैं तथा विद्यालय में अध्यापक भी उन्हें सिखाने का यही तरीका विकसित करता है जबकि अंग्रेजी माध्यम का विद्यार्थी एक कृत्रिम पर्यावरण में अपने स्कूल में रहता है अगर उसके घरेलू संस्कार अच्छे हैं तो वह अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लेता है नहीं तो वह अंग्रेजीयत सीखता है और ज्ञान मूल्यों से वंचित होकर कुंठा ग्रस्त हो जाता है तथा आधुनिकता और भौतिकता की चकाचौंध में न तो वह भारतीय परंपरा के अनुकूल समायोजन कर पाता है और ना ही अंग्रेजी करण का भरपूर लाभ उठा पाता है।

समायोजन– मनुष्य का जीवन संघर्षों और चुनौतियों से भरा पड़ा है जब बचपन से ही हमें अपने जीवन काल की विविध समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है जो जिस ढंग से जीवन यापन करने की लड़ाई लड़ता है वह उतने ही अच्छे ढंग से जीवन में सफलता अर्जित करता है मानव अपनी आवश्यकता पूर्ति अपने उद्देश्य प्राप्ति अपने वातावरण में ठीक से संतुलन में तालमेल बिठाने की कोशिश करता रहता है वह अपने अस्तित्व विकास के लिए संघर्ष करता रहता है जिन प्राणियों में बदलती परिस्थितियों में अपने आप को बदलने या अनुकूल की ज्यादा क्षमता होती है वे जीवित रहते हैं बाकी समाप्त हो जाते हैं।

समायोजन एक प्रक्रिया है एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा सुखी व संतोषप्रद जीवनयावन की राह पकड़ी जा सकती है समायोजन हमें मनोवैज्ञानिक रूप से अच्छी तरह जीने के लिए उसी रूप में आवश्यक है जैसे कि बदलते मौसम में या हालातों में शरीर जिंदा रखने के लिए वस्त्रों खानपान रहन सहन में परिवर्तन लाकर अनुकूल करने की प्रक्रिया होती है समायोजन से हमें अपनी इच्छा हो या आवश्यकताओं तथा आवश्यकताओं को पूरा करने संबंधी अपनी योग्यताओं तथा क्षमताओं में संतुलन बनाए रखने में मदद मिलती है अगर हमारे पास ज्यादा क्षमता और योग्यता होती है तो तो हम अपनी आवश्यकताओं की सीमा बढ़ाते चले जाते हैं और अगर कम होती है तो अपनी आवश्यकताओं को सीमा में करते हैं समायोजन संबंधी गुण परिस्थितियों के अनुसार हमें अपने आप को ढालने में पूरी मदद करता है परिणाम स्वरूप शहरों में जब कोई लड़की गांव से नववधू बनकर आती है तो उसकी समायोजन क्षमता ही उसकी मदद करती है

समायोजन के प्रकारः– सब प्रकार से समायोजित व्यक्ति वह होता है जो पहले तो अपने आप से ही संतुष्ट और समायोजित हो तथा दूसरे अपने चारों ओर फैले वातावरण या परिवेश से उसका सही तालमेल हो। इस दृष्टि से समायोजन के क्षेत्रों को व्यक्ति तथा उसके बाद आवरण में ही निहित माना जाना चाहिए।एक व्यक्ति की दुनिया जहां उसके अपने शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य तथा व्यक्तित्व के महत्वपूर्ण पहलुओं के इर्द–गिर्द घूमती हैवहां उसे अपने सामाजिक परिवेश तथा कामकाज के क्षेत्रों में भी समायोजित होने की आवश्यकता पड़ती है समायोजन संबंधी आवश्यकताओं के परिणाम स्वरूप तीन मुख्य भागों में बांटकर समझने का प्रयास करते हैं

व्यक्तिगत समायोजनः– व्यक्ति अपने आसपास से कितना समायोजित है इस बात का निर्णय उसके इस क्षेत्र के समायोजन असर से ही ज्ञात होता है कोई व्यक्ति किसी क्षेत्र में किस स्तर तक समायोजित है वह इस बात पर निर्भर करता है कि उस क्षेत्र से व्यक्ति विशेष की आवश्यकताएं कितनी सीमा तक पूरी होती हैं अथवा उनके पूरी होने की संभावना एवं आशा से वह की सीमा तक संतुष्ट रहता है जब तक यह आवश्यकताएं पूरी होती है या इनकी पूर्ति की आशा उसे रहती है व्यक्ति समायोजित रहता है। विपरीत अवस्था में वह कुसमायोजन का शिकार हो जाता है

अब प्रश्न यह उठता है कि व्यक्ति अपने आप को समायोजित रखने या संतुष्ट रखने से संबंधित विभिन्न क्षेत्र कौन–कौन से हैं जिनके ऊपर उसका व्यक्तिगत समायोजन निर्भर करता है प्रमुख रूप से यहां उसके व्यक्तित्व के विकास से संबंधित विभिन्न पहलुओं तथा व्यक्तिगत आवश्यकताओं में निहित समायोजन को ही आधार बनाया जा सकता है

शारीरिक विकास और स्वास्थ्य संबंधी समायोजन व्यक्ति अपनी शारीरिक संरचना, उसके विकास, शारीरिक अंगों तथा संस्थानों की कार्यप्रणाली तथा सामान्य स्वास्थ्य से संतुष्टि का अनुभव करने वाली बातें शारीरिक विकास और स्वास्थ्य संबंधित समायोजन के क्षेत्र में आती हैं इस प्रकार का समायोजन अपने आप से संतुष्टि या समायोजित होने में पूरी मदद करता है व्यक्तिगत समायोजन का दूसरा बड़ा पहलू मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित है चिंता, क्लेश, निराशाओ, कुण्ठाओ, दबाव तथा तनाव का हमारे जीवन में क्या स्थान है हम उन्हें किस रूप में लेते हैं और उन्हें किस प्रकार निपटाते हैं एक अच्छे मानसिक स्वास्थ्य का स्वामी ही अच्छे ढंग से व्यक्तिगत सामाजिक और व्यवसायिक समायोजन कर सकता है तीसरा महत्वपूर्ण पहलू संवेगात्मक समायोजन का है अपने आप से समायोजित होने के लिए उसमें संवेगात्मक परिपक्वता का होना अति आवश्यक है उचित समय पर उचित रूप से उचित समय को की अभिव्यक्ति व्यक्ति के समायोजन के लिए काफी आवश्यक है जो लोग ऐसा नहीं कर पाते वे संवेगात्मक रूप से अस्थिर तथा कुसमायोजित माने जाते हैं। लैगिक या यौन संबंधी आवश्यकता हमारी आवश्यकताओं में से एक बड़ी आवश्यकता हैइस आवश्यकता की पूर्ति जब तक सामाजिक मान्यता प्राप्त मानकों के होती रहती है तो व्यक्ति समायोजित अनुभव करता है व्यक्ति का समुचित लैंगिक विकास, यौन या काम के प्रति उचित दृष्टिकोण तथा उसकी स्वाभाविक अभिव्यक्ति एवं तृप्ति कि उसे अपने आप से तथा अपने परिवेश से ठीक प्रकार समायोजित रखती है व्यक्तिगत आवश्यकताओं से संबंधित समायोजन हमारे व्यक्तिगत समायोजन की परिधि में ऐसा समायोजन भी शामिल होता है जिसका संबंध हमारी व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति से होता है शारीरिक आवश्यकताओं, भौतिक सुख–सुविधाओं, सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं आदि की पूर्ति हेतु हम शुरू से ही प्रयत्न करते रहते हैं इस तरह व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति से संबंधित समायोजन हमारे व्यक्तिगत समायोजन के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है

सामाजिक समायोजनः– व्यक्ति को जितना अपने आप से संतुष्ट तथा समायोजित होने की आवश्यकता होती है उतना ही अपने सामाजिक परिवेश से जुड़ी बातों तथा व्यक्तियों के साथ उचित सम्बंध बनाए रखकर समायोजित रहने की होती है उसे अपने परिवेश तथा उसमे उपलब्ध परिस्थितियों से भी संतुष्ट अनुभव करना चाहिए, तभी मैं ठीक तरह से समायोजित रह सकता है सामाजिक परिवेश का दायरा उसके घर परिवार से शुरू होकर विश्व बंधुत्व की सीमाओं को छूता है

प्रश्न उठता है कि घर परिवार से लेकर मित्र, सगे संबंधियों, पड़ोसियों तथा समुदाय या समाज में रहने वाले व्यक्तियों तथा संपूर्ण सामाजिक परिवेश से समायोजित होने के लिए व्यक्ति को किस प्रकार अपने प्रयत्न करने चाहिए। इस दिशा में पहली बात तो यह है कि उसे सामाजिकता का पाठ सही ढंग से पढ़ाया जाना चाहिए तथा उसे सच्चाई से व्यवहार में लाना चाहिए उसमें सभी सामाजिक गुणों का समावेश होना चाहिए तथा अधिकार के स्थान पर कर्तव्य पालन की इच्छा होनी चाहिए। समाज के नियम उसकी आचार संहिता समाज तथा विशेषकर अपने समुदाय की विशेषज्ञ अभिवृत्तियों संस्कारों तथा रीति–रिवाजों से उसे परिचित होना चाहिए तथा उसका एक सीमा तक पर्याप्त सम्मान करना चाहिए ।ऐसी अवस्था में ही उसे अपने सामाजिक परिवेश में ठीक प्रकार समायोजित होने में उचित सहायता मिल सकती है।

व्यवसायिक समायोजनः– जितने हम समायोजन के अन्य क्षेत्रों व्यक्तिगत तथा सामाजिक होने में अधिक समायोजित उतनी ही सहायता हमें व्यवसायिक रूप से समायोजित होने में मिलती है। अब प्रश्न यह उठता है कि व्यवसायिक रूप से समायोजित व्यक्ति किसे कहा जाए। कुछ अनुसंधाना द्वारा परिणाम सामने आए हैंअपने व्यवसाय चुनाव से भी संतुष्टि अनुभव करते हैं अपने कार्य को करने में प्रसन्नता होती है कामकाज की दुनिया से संबंधित विभिन्न परिस्थितियों से संतुष्ट नजर आते हैं अपने व्यावसायिक साथियों तथा अधिकारों से उनका ठीक प्रकार से समायोजन रहता है अपने व्यवसाय के प्रति पूरी निष्ठा होती है वह यह

भावना रखते हैं कि इस व्यवसाय से समाज को प्रगति के मार्ग पर ले जाए जा सकता है उसमें सृजनात्मकता के तत्व भी उपयुक्त मात्रा में पाए जाते हैं जिसका प्रमाण वे यदा–कदा देते रहते हैं आर्थिक दृष्टि से भी समुचित रूप से संतुष्ट अनुभव करते हैं दूसरे व्यवसाय से जिसमें पैसा या सुविधाएं मिलती है अपने व्यवसाय से तुलना कर अपने मन में किसी प्रकार के हीन या विरोधी भाव नहीं उत्पन्न होने देते हैं अपने व्यवसाय की गरिमा प्रतिष्ठा बनाए रखने का समुचित प्रयत्न करते हैं तथा इस कार्य में अपने साथियों तथा को अधिकारियों का पूरा साथ देते हैं

शोध अध्ययन उद्देश्य–

1. प्रस्तुत शोध के उद्देश्यों को शोधार्थी द्वारा निम्नलिखित प्रकार से निर्धारित किया गया है
2. माध्यमिक स्तर के हिंदी में अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों का समायोजन स्तर ज्ञात करना।
3. माध्यमिक स्तर के हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों का समायोजन स्तर ज्ञात करना।
4. माध्यमिक स्तर के अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों का समायोजन स्तर ज्ञात करना।
5. ग्रामीण क्षेत्र के हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों का समायोजन स्तर ज्ञात करना।
6. शहरी क्षेत्र के हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों का समायोजन स्तर ज्ञात करना।
7. ग्रामीण क्षेत्र के अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों का समायोजन ज्ञात करना।
8. शहरी क्षेत्र के अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों का समायोजन स्तर ज्ञात करना।

परिकल्पना (भ्लचवजीपमेमे)–

1. माध्यमिक स्तर के हिंदी व अंग्रेजी माध्यम के छात्र छात्राओं का समायोजन स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. ग्रामीण क्षेत्र एवं शहरी क्षेत्र के हिंदी माध्यम के छात्र छात्राओं का समायोजन स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. ग्रामीण क्षेत्र एवं शहरी क्षेत्र के अंग्रेजी माध्यम के छात्र छात्राओं का समायोजन स्तर में कोई सार्थक अंतर नही है।

शोध अध्ययन विधि– प्रस्तुत अध्ययन में आदर्श मुलक सर्वेक्षण विधि का अनुगमन किया गया है

जनसंख्या एवं न्यादर्श–प्रस्तुत शोध कार्य राजकीय आश्रम पद्धति के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 10 के विद्यार्थियों की जनसंख्या ली गई है जिसमें से सहजता से उपलब्धता के आधार पर निम्नवत न्यादर्श रखा गया है छात्र 130 छात्राएं 130 का चयन किया गया।

शोध उपकरण– प्रस्तुत शोध कार्य में डिंपल रानी एवं जखेड़ा समायोजन मापनी का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका 1: माध्यमिक स्तर के हिंदी व अंग्रेजी माध्यम के छात्र–छात्राओं का समायोजन स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

Group	N	Mean	sd	T	Significent level
Hindi	130	94.53	7.40	0.77	-05
English	130	95.37	9.95		

तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की समायोजन के मध्यमानो के अंतर तथा मुक्ताश 258 का टी –अनुपात का मान 0ण्77 है जो कि सार्थकता स्तर .05 के सारणी 1.98 से कम है अर्थात मध्यमानों में सार्थक अंतर है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है अर्थात माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत हिंदी व अंग्रेजी माध्यम के छात्र छात्राओं का समायोजन स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

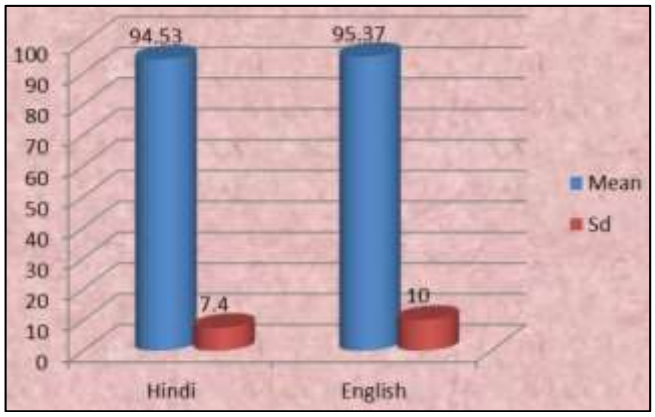

चित्र 1: हिंदी व अंग्रेजी माध्यम के छात्र–छात्राओं का समायोजन स्तर

तालिका 2: माध्यमिक स्तर के हिंदी व अंग्रेजी माध्यम के छात्र का समायोजन स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

Group	N	Mean	sd	t	Significent level
Hindi	65	96.86	4.38	2.37	.05
English	65	92.89	12.76		

तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के हिंदी व अंग्रेजी के विद्यार्थियों की समायोजन के मध्यमानो के अंतर तथा मुक्ताश 128 का टी –अनुपात का मान 2ण्37 है जो कि सार्थकता स्तर .05 के सारणी 1.98 से अधिक है अर्थात मध्यमानों में सार्थक अंतर है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है अर्थात माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत हिंदी व अंग्रेजी माध्यम के छात्रों के समायोजन स्तर में सार्थक अंतर है।

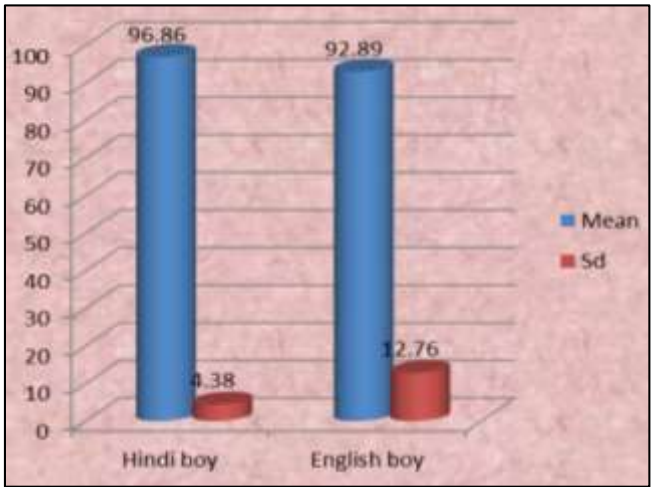

चित्र 2: हिंदी व अंग्रेजी माध्यम के छात्र का समायोजन स्तर

तालिका 3: माध्यमिक स्तर के हिंदी व अंग्रेजी माध्यम के छात्रओं का समायोजन स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

Group	N	Mean	sd	t	Significent level
Hindi Girl	65	92.17	8.97	4.49	.05
English Girl	65	97.89	4.78		

तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के हिंदी व अंग्रेजी के छात्राओं की समायोजन के मध्यमानो के अंतर तथा

मुक्ताश 128 का टी –अनुपात का मान 4.49 है जो कि सार्थकता स्तर .05 के सारणी 1.98 से अधिक है अर्थात मध्यमानों में सार्थक अंतर है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है अर्थात माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत हिंदी व अंग्रेजी माध्यम के छात्राओं के समायोजन स्तर में सार्थक अंतर है।

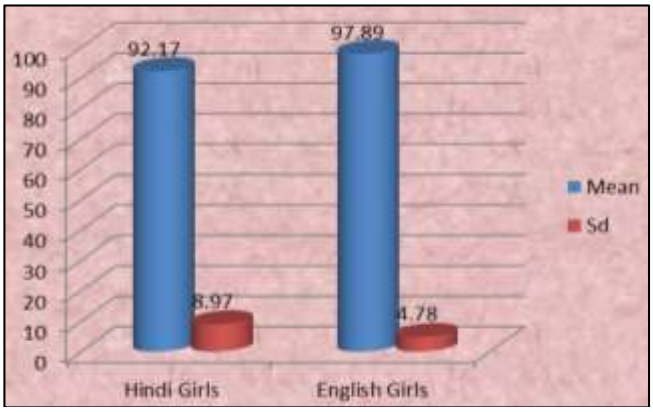

चित्र 3: हिंदी व अंग्रेजी माध्यम के छात्रओं का समायोजन स्तर

तालिका 4: ग्रामीण क्षेत्र एवं शहरी क्षेत्र के हिंदी माध्यम के छात्र का समायोजन स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

Group	N	Mean	sd	t	Significent level
Rural Hindi	35	96.23	4.44	1.26	.05
Urben Hindi	30	97.60	4.26		

तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र एवं शहरी क्षेत्र के हिंदी माध्यम के छात्र के छात्रों की समायोजन के मध्यमानो के अंतर तथा मुक्ताश 63 का टी –अनुपात का मान 1ण्26 है जो कि सार्थकता स्तर .05 के सारणी 1.98 से कम है अर्थात मध्यमानों में सार्थक अंतर है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है अर्थात माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत हिंदी व अंग्रेजी माध्यम के छात्राओं के समायोजन स्तर में सार्थक अंतर नही है।

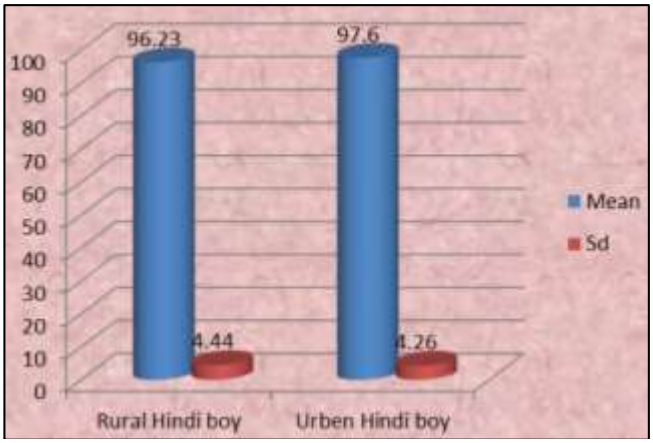

चित्र 4: ग्रामीण क्षेत्र एवं शहरी क्षेत्र के हिंदी माध्यम के छात्र का समायोजन स्तर

तालिका 5: ग्रामीण क्षेत्र एवं शहरी क्षेत्र के हिंदी माध्यम के छात्राओं का समायोजन स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

Group	N	Mean	sd	t	Significent level
Rural Hindi	41	90.34	10.21	2.24	0.05
Urben hindi	24	95.43	4.87		

तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र एवं शहरी क्षेत्र के हिंदी माध्यम की छात्राओं की समायोजन के मध्यमानो के अंतर तथा मुक्ताश 63 का टी –अनुपात का मान 2.24 है जो कि सार्थकता स्तर .05 के सारणी 1.98 से अधिक है अर्थात मध्यमानों में सार्थक अंतर है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है अर्थात माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत हिंदी व अंग्रेजी माध्यम के छात्राओं के समायोजन स्तर में सार्थक अंतर है।

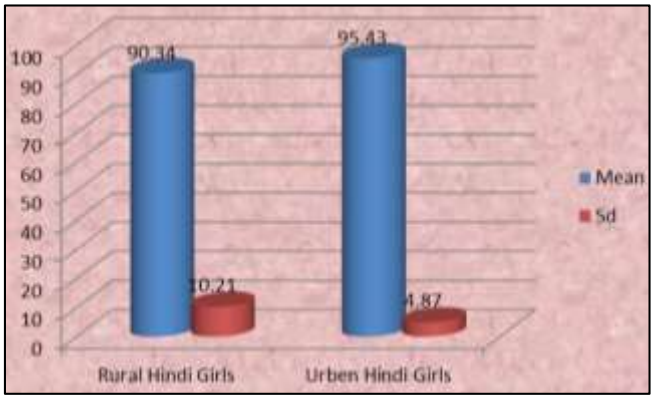

चित्र 5: ग्रामीण क्षेत्र एवं शहरी क्षेत्र के हिंदी माध्यम के छात्राओं का समायोजन स्तर

तालिका 4: ग्रामीण क्षेत्र एवं शहरी क्षेत्र के अंग्रेजी माध्यम के छात्र का समायोजन स्तर में कोई सार्थक अंतर नही है।

Group	N	Mean	sd	t	Significent level
Rural English	20	95.15	5.42	0.95	.05
UrbenEnglish	45	91.89	14.85		

तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र एवं शहरी क्षेत्र के अंग्रेजी माध्यम के छात्र की समायोजन के मध्यमानो के अंतर तथा मुक्ताश 63 का टी –अनुपात का मान 0.95 है जो कि सार्थकता स्तर .05 के सारणी 1.98 से कम है अर्थात मध्यमानों में सार्थक अंतर नही है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है अर्थात माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत हिंदी व अंग्रेजी माध्यम के छात्राओं के समायोजन स्तर में सार्थक अंतर नही है।

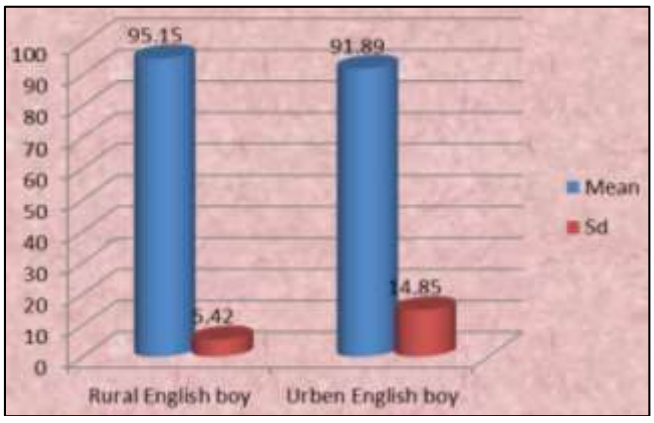

चित्र 6: ग्रामीण क्षेत्र एवं शहरी क्षेत्र के अंग्रेजी माध्यम के छात्र का समायोजन स्तर

तालिका 4: ग्रामीण क्षेत्र एवं शहरी क्षेत्र के अंग्रेजी माध्यम के छात्राओं का समायोजन स्तर में कोई सार्थक अंतर नही है।

Group	N	Mean	sd	t	Significent level.
Rural English	25	96.24	4.44	2.28	.05
Urben English	40	98.94	4.74		

तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र एवं शहरी क्षेत्र के अंग्रेजी माध्यम की छात्राओं की समायोजन के मध्यमानो के

अंतर तथा मुक्ताश 63 का टी –अनुपात का मान 2.28 है जो कि सार्थकता स्तर .05 के सारणी 1.98 से अधिक है अर्थात मध्यमानों में सार्थक अंतर है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है अर्थात माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत हिंदी व अंग्रेजी माध्यम के छात्राओं के समायोजन स्तर में सार्थक अंतर है।

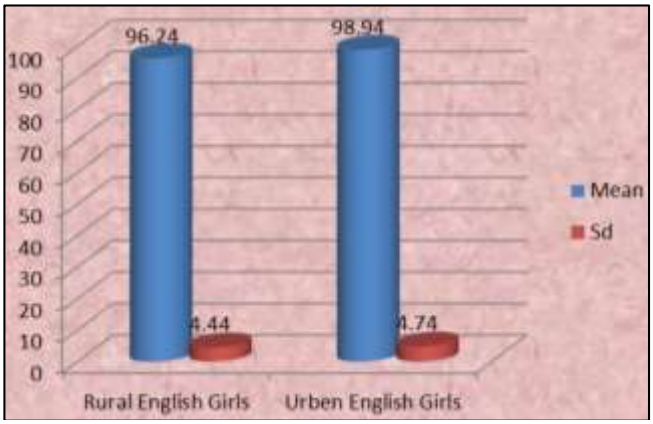

चित्र 7: ग्रामीण क्षेत्र एवं शहरी क्षेत्र के अंग्रेजी माध्यम के छात्राओं का समायोजन स्तर

निष्कर्ष:–

1. प्रथम शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है अर्थात माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत हिंदी व अंग्रेजी माध्यम के छात्र छात्राओं का समायोजन स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. द्वितीय शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है अर्थात माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत हिंदी व अंग्रेजी माध्यम के छात्रों के समायोजन स्तर में सार्थक अंतर है।
3. तृतीय शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है अर्थात माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत हिंदी व अंग्रेजी माध्यम के छात्राओं के समायोजन स्तर में सार्थक अंतर है।
4. चतुर्थ शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है अर्थात माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत हिंदी व अंग्रेजी माध्यम के छात्राओं के समायोजन स्तर में सार्थक अंतर नही है।
5. पांचवीं शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है अर्थात माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत हिंदी व अंग्रेजी माध्यम के छात्राओं के समायोजन स्तर में सार्थक अंतर है।
6. छटी शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है अर्थात माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत हिंदी व अंग्रेजी माध्यम के छात्राओं के समायोजन स्तर में सार्थक अंतर नही है।
7. सतवी शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है अर्थात माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत हिंदी व अंग्रेजी माध्यम के छात्राओं के समायोजन स्तर में सार्थक अंतर है।

अध्ययन के पश्चात् आंकडों का विशलेषण कर निष्कर्ष यह निकला कि छात्र–छात्राओं के भाषा के आधार पर समायोजन स्तर में अन्तर दृष्टिगोचर हुआ है। जिसके बहुत से कारण हो सकते है ये अध्ययन इस ओर संकेत करता है कि आधुनिक, वैज्ञानिक एंव तकनीकी दौर में भाषा विकास एंव समय की मांग के अनुरूप भाषा अधिगम पर बल दिया जाना चाहिए। जिससे कि शिक्षा के लक्ष्य को और सार्थक रूप से प्राप्त किया जा सके।

Refrences

1. Verma Kumar R, Kumari S. Academic Achievement of Children at Elementary Stage in Relation to Their Adjustment. Global Journal for Research Analysis 2016;5(1):310-312.
2. Gill Satish. Emotional, Social and Educational Adjustment of Visually Handicapped Students of Special Schools students. International Journal of Scientific and Research Publications 2014;4(3):1-4.
3. Gill Satish. Emotional, Social and Educational Adjustment of Visually Handicapped Students of Special Schools students". International Journal of Scientific and Research Publications 2014;4(3):1-4.
4. Ganai *et al*. A comparative study of adjustment and academic achievement of colege students. Journal of Educational Research and Essays 2013;1(1):5.
5. Yellaiah. A study of adjustment on academic achievement of high school students".mInternational Journal of Social Sciences & Interdisciplinary Research 2012;1(5):84-94.
6. Tambawal MU. Counselling for enhancement of personal-social and vocational adjustment. Induction/Orientation for Sokoto State Indigens Undergiong Computer Training Programme of Sokoto State Education Development Trust Fund 2010.